

verdaunt Med. η. 13. Suçr. 4, 136, 18. 163, 8. 2, 178, 20. 193, 6. Kān. 79. Hit. I, 19. तस्माञ्जीर्णी भवेत् Me R. 3, 49, 52. Hariv. 11367. मया जीर्णस्तु सो ऽ मरुः von mir verdaunt MBh. 3, 8623. जीर्णश्च येनामरुः Varāh. Bhṛ. S. 12, 2. — 3) gebrechlich —, alt machen: न ये ञरन्ति शरदो न मासोः RV. 6, 24, 7. alt werden lassen: धत्ते रत्नानि ञरन्ते च मुरीन् 7, 67, 10. ञर (ञ), ञरति unterwerfen, demüthigen (न्यङ्कारे) Kavikalpādr. im ÇKDr. — caus. ञरयति (ep. auch °ते) Dhātup. 19, 64. Vop. 18, 22. 1) aufreiben, abnutzen, verzehren, altern machen: मर्तस्य देवी ञरयत्यायुः RV. 1, 92, 10. ञरयन्ती (Padap. ञर °) 124, 10. उपसेा ञरयन्तीः 179, 1. 7, 73, 5. ञ्जीर्णी त्वं ञरयसि सर्वमन्यत् TS. 4, 3, 44, 5. (द्युिः) ञ्जुर्षो ञरयन्मरिम् RV. 2, 8, 2. 16, 1. 4, 48, 5. सर्वेन्द्रियाणां ञरयति तेजः Kāṭh. 1, 26. ये — तपसि प्रसक्ताः — ञरयन्ति देहान् MBh. 3, 12646. ञराञ्जितसर्वाङ्ग Hariv. 15988. R. 2, 2, 5. ञराञ्जितरितैः पत्नैः 3, 22, 25. व्यक्तं हि जीर्णमापो ऽ पि बुद्धिं ञरयते नरः MBh. 7, 5967. कस्तमुत्सङ्गते वीरो युद्धे ञरयितुं युमान् so v. a. klein kriegen 3, 1939. ञरयत्यायु या काषे निगोर्णमनलो यथा Bhāg. P. 3, 25, 33. नये ञरयितुं शक्या सामुरैरमरैरपि । विषसंसृष्टमत्यर्थं भुक्तमन्नमिवैजसा ॥ R. 5, 47, 24. In den beiden letzten Beispielen aufzehren, klein kriegen und auch verdaunt werden lassen. — 2) verdauen, machen dass Etwas verdaunt wird: ञरयामास तत् (विषम्) — सक्त्वात्नेन MBh. 1, 2240. (एनम्) संबन्ध ञरयिष्यामि यथागस्त्यो मरुामरुम् 3, 422. 13, 4374. 4381. यथा हि बलवान्काश्चिदाकारान्दिग्गुणानपि । भुङ्क्ते ञरयते R. 5, 84, 12. तेन (पादपेन) तस्मालमादत्तं ञरयत्यग्निमारुतौ MBh. 12, 6838. ञ्जिर्जरयते यच्च 6841. — ञरयति altern (!) Dhātup. 34, 9.

— ञन्नु nach, durch Jmd gebrechlich werden, — sich abnutzen, — altern: ञन्नुजीर्णी वृषलो देवदत्तः । ञन्नुजीर्णी वृषलो देवदत्तेन, ञन्नुजीर्णी देवदत्तेन P. 3, 4, 72. Sch. विश्वमनुजीर्णी ऽनन्तः Vop. 26, 129.

— निम् caus. zerreiben, zermalmen: गिरिराद्गदचारीव पद्भ्यां निर्ज-रयन्महीम् Bhāg. P. 6, 12, 29.

— परि 1) sich abnutzen, altern: वासांसि परिजीर्णानि MBh. 4, 332. परिजीर्णं पत्रशाकम् weik, alt Suçr. 4, 224, 20. परिजीर्यत् alternd MBh. 1, 5139. 5197. — 2) verdaunt werden: परिजीर्यति Suçr. 2, 178, 14. 12. °येत 6. 8. 10.

— प्र verdaunt werden: सुखमन्नं प्रजायति Suçr. 4, 239, 1. 244, 16.

2. ञर, ञरते sich in Bewegung setzen; sich nähern, herbeikommen (vgl. चर): उषः सूनृते प्रयमा ञरस्व RV. 1, 123, 5. 7, 76, 6. प्रावाणेषु तदिदं ञरये गृधेव वृत्तं निधिमतमच्छं 2, 39, 1. गवां न सर्गा उषसो ञरते 4, 51, 8. सद्यो-नुवस्ते वाञ्छा ञस्म-ये विश्वञ्चन्द्राः । वषैश्च मनु ञरते 8, 70, 9. प्रातर्ञरये ञर-णव कार्या वस्तोर्वस्तोर्त्यजता गच्छथो गृहम् 10, 40, 3. Auch wohl: ञर-यामस्मदि पणोर्मनीयो युवोरवश्चकृमा यातमवीक् nahet euch! weg von uns (wendet) den Anschlag des Paṇi 3, 58, 2.

3. ञर, ञरते (vgl. 1. ञर) 1) knistern, rauschen, vom Feuer: बृहदु-ग्रयः समिधा ञरते RV. 7, 72, 4. ञ्म्रे ञरस्व स्वपत्य आयुनि 3, 3, 7. 1, 59, 7. घृतेनाङ्कतो ञरते द्रविद्युत्तु 10, 69, 1. 118, 5. 1, 94, 14. 2, 28, 2. 5, 13, 4. schnattern, crepare: ऊर्ध्वं नृगा ञरते 8, 2, 12. — 2) sich hören lassen; rufen, anrufen Naigh. 3, 14. एष स्य कारुर्जरते सूक्तैः RV. 7, 66, 9. 8, 2, 16. ञ्चिन्ना ऊवे ञरमापो ञ्चैः 6, 62, 1. 4. ञरमाणं दिवं दिवे 3, 51, 1. युवामग्नि-मूषां न ञरते हविष्मन् 1, 181, 9. तव त्रताय मतिभिर्जरामहे 2, 23, 6. 3, 41, 7. युक्तप्रावा सुतसोमा ञरते 5, 37, 2. Ueber das möglicher Weise hierher

III. Theil.

zu ziehende ञरयापि RV. 6, 12, 4 s. Nir. 6, 15 u. Erl.

— प्रति entgegenrauschen: प्रति षीमग्निर्जरते समिद्धः प्रति विप्रासो मति-भिर्गणात्सः RV. 7, 78, 2. zurufen, begrüßen: (उषसम्) प्रति विप्रासो मति-भिर्जरते 5, 80, 1. उच्चा ञरते प्रति वस्तोरुचिना 4, 45, 5. 7, 73, 3. प्रति वा रथं नृपती ञरथ्यै 67, 1.

— सम् ertönen: सं ते श्स्तिर्द्ववाता ञरेत RV. 4, 3, 15. सं ते वावाता ञरतामियं गीः 4, 8.

ञर (von 1. ञर) 1) adj. a) alternd, alt P. 6, 2, 116. Sch. zu AV. Paāt. in Ind. St. 4, 295(?); vgl. ञजर, गोजर. — b) aufreibend, abnutzend, verzehrend; vgl. ञर्जर. — 2) ञर (wohl m.) Abnutzung, Aufreibung: द्वादशारे नृदि तस्माराय वर्वर्ति चक्रम् RV. 1, 164, 11. ञराय ञरताम् 2, 34, 10. — 3) f. ञरौ P. 3, 3, 104. Vop. 26, 191. a) das Altwerden, Alter AK. 2, 6, 4, 41. H. 340. ञरां चिन्मे निर्धे तिर्जप्रसीत RV. 5, 41, 17. AV. 3, 11, 7. 8, 2, 11. 11, 8, 19. 18, 4, 50. 19, 24, 5. VS. 18, 3. तस्य ञरेव मृत्युर्भवति er stirbt nur am Alter Çat. Br. 5, 4, 1. 11, 8, 6. एतद्वै ञरामये सन्नं यद्विद्वेत्त्रं ञरया वा ह्ये-वास्मान्मुच्यते मृत्युना का 12, 4, 1. 14, 6, 1. 7, 1, 41. Çāṅkh. Gṛh. 3, 8. विध्वेती ञरामंजर उष ञर्गाः TS. 4, 3, 44, 5. ञरया चाभिवननम् M. 6, 62. ञरां चैवाप्रतीकाराम् 12, 80. ञरशोकसमाविष्ट 6, 77. ञरातुर altersschwach Çabdā. im ÇKDr. ञरयाविष्टः R. 3, 1, 9. ञराभिभूत, ञरामार्कन् MBh. 1, 3161. ञरां प्राप्य 3466. ञरां गतः 13, 333. ञरां न वास्यति Hariv. 6978. ञरां समुपयाति Varāh. Laghu. 11, 4. ञरान्वित Bhṛ. S. 73, 3. ञरातीर्णा ञरां समुपयाति Varāh. Laghu. 11, 4. ञरान्वित Bhṛ. S. 73, 3. ञरातीर्णा R. 3, 11, 9. Bhartṛ. 1, 89. Bhāg. P. 1, 13, 23. ञरया ग्रस्तः 20. Suçr. 4, 3, 20. 4, 11. ञरापरिपक्षशरीर 44, 20. 129, 19. Ragh. 12, 2. Hit. I, 103. काले-नाथ प्रवृद्धं मामग्रहीच्छ्रुक्ते ञरा Kathās. 22, 159. ञरासु Bhartṛ. 1, 29. ञराञ्जितरितैः पत्नैः R. 3, 22, 25. personif. als eine Tochter des Todes VP. 56. — b) das Sichaufzehren, Verdauntwerden: (मद्यम्) ञरां पावन्न याति Suçr. 2, 473, 14. — c) eine Art Dattelbaum (तीर्का) Çabdā. im ÇKDr. — d) N. pr. einer göttlich verehrten Rākshasi, welche den in zwei Hälften geborenen Gāraśamdhā zu einem Ganzen vereinigte, MBh. 2, 715. 729. fgg. 7, 9224. Hariv. 1810. VP. 436. Bhāg. P. 9, 22, 8. — Vgl. विञर. ञरैठ (wie eben) Uq. 1, 100, Sch. 1) adj. a) hinfällig, alt, bejahrt H. an. 3, 175. Bhāg. P. 6, 1, 25. 9, 6, 41. Rāga-Tar. 2, 170. ञ्रति° Sā. zu RV. 1, 123, 1. — b) hart H. 1387. H. an. = कर्कश und कठिन Med. th. 13. — c) gelblich (die Farbe der alten Blätter) Med. — 2) m. Alter Viçva im ÇKDr. — Vgl. ञठर.

ञरुी f. eine Art Gras (गर्मेटिका, जयाश्रया, मुनास्ता) Rāgan. im ÇKDr.

ञरणी 1) adj. a) hinfällig, alt Çabdā. im ÇKDr. पितरा सना यूवेव ञर-रूपा शयाना RV. 4, 33, 3. — b) auflösend, Verdauung befördernd Suçr. 1, 155, 16. 190, 2. 192, 11. 193, 1. — 2) m. n. Bez. verschiedener die Ver- dauung befördernder Heilmittel: a) = ञरिक Kūmmel, m. AK. 2, 9, 36. H. an. 3, 205. n. Med. η. 49. Ratnam. 100. = कृञ्जरीरक Nigella indica Roxb., m. H. an. n. Med. — b) m. = कामर्द Rāgan. im ÇKDr. — c) n. = कुष्ठैषधि Çabdā. im ÇKDr. — d) Asa foetida, m. H. an. n. Med. — e) eine Art Salz (रुचक, सौवर्चल), m. H. an. n. Med. Çabdā. im ÇKDr. — 3) f. ञरणी a) Alter: भृद्रे जीवन्ती ञरपामुशीमदि RV. 10, 37, 6. 7, 30, 4. विप्रस्य ञरपामुपेयुषः 10, 39, 8. — b) Nigella indica Roxb. Rāgan. im ÇKDr. — 4) n. a) das Altwerden Wils. — b) Bez. einer der 10 angeblichen Arten, auf welche eine Eklipse endet (मेत्त), Varāh. Bhṛ. S. 5,